प्राक्कथन

प्रारम्भिक काल में मातृ-देवी उपासना के संदर्भ में कुछ भी कहना कठिन है । परन्तु सिन्धुघाटी के उत्खनन के पश्चात् मृण्मूर्तियों के अन्तर्गत मातृ-देवी मूर्तियों का अस्तित्व एक सशक्त साक्ष्य माना जा सकता है । इससे ही यह अनुमान लगाना सरल हुआ कि सिन्धु घाटी सभ्यता के समय में मातृ-देवी की उपासना का प्रचलन था । परन्तु वैदिक काल से यह परम्परा एक अन्य तथा विशिष्ट स्वरूप में प्रचलित थी । देवी का मानव रूप प्राय: कम, परन्तु उसके निराकार दैवी स्वरूप को नि:संदेह महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। ऋग्वेद की सैकड़ों ऋचाओं में उषा की स्तुति की गयी है, वह इस तथ्य की साक्षी है । इसके अतिरिक्त अदिति भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण देवी समझी गयी, क्योंकि आदित्य, अदिति से सीधे संबंधित है । यद्यपि कुछ वेदों मंत्रों में दस मातृकाओं एवं सात मातृकाओं का उल्लेख प्राप्त होता है । परन्तु उनका क्या और कितना महत्व था । यह स्पष्ट है कि उत्तर वैदिक-काल में मातृकाओं का आस्तित्व" था, वहीं महाभारत-काल में ये मातृकाएं काफी, हलिमा, वृहन्ता, आर्या, पलाला एवं व्ययमित्रा की लोक-देवियों के रूप में उपासना की जाती थी । समयानुसार इन देवियों का महत्व बढ़ने लगा और अंतत: सप्तमातृकाओं ने अपना स्थान सुस्थापित कर लिया ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध "बुन्देलखण्ड की मातृ-देवी प्रतिमाओं का समीक्षात्मक अध्ययन" में वर्णित मूर्तियाँ भारतीय कला की अनुपम देन हैं ।

1989 की नव-वर्ष की शुभवेला में मुझे मेरी रूचि के अनुकूल "उक्त विषय पर कुछ कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। विषय को पूर्णरूपेण न जानते-समझते हुए भी मैं मात्र इस सामान्य जानकारी से परिचित थी कि जिस विभाग में मैंने अध्ययन किया है, उसके संग्रहालय में कुछ मातृ-देवी प्रतिमाएँ भी सुरक्षित हैं । उनको यदा-कदा देखने पर मैं एक भावना से प्राय: आभिभूत हो जाया

करती थी । भावना है, कि हमने अपने जीवन में माता को जो महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है, आखिर उसका देवताओं में भी एक सम्मानजनक तथा उच्च स्थान कब से और कैसे स्थापित हुआ । इसकी चर्चा अपने गुरूजनों से करने के पश्चात् मुझे यह प्रेरणा प्राप्त हुयी कि इस पर अपने शोध-प्रबन्ध के निमित्त कुछ कार्य किया जा सकता है । जैसा कि प्राय: हर नये शोधार्थी के साथ होता है, प्रारंभ में अनेक गुत्थियों, समस्याओं से जूझना पड़ा परन्तु अन्तत: अपनी प्रेरणा द्वारा सदैव सक्रिय रहकर शोध-प्रबन्ध को साकार रूप देने में सफल हो सकी ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है । यद्यपि मेरा विषय -"बुन्देलखण्ड क्षेत्र की मातृ-देवी प्रतिमाओं का समीक्षात्मक अध्ययन" है, तथापि मध्यप्रदेश के पाँच जिले जो कि बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत है, को ही विशेष महत्व दिया है ।सुविधानुसार उत्तरप्रदेश के कुछ भागों को भी अपने अध्ययन में सम्मिलित किया है ।

प्रथम अध्याय में बुन्देलखण्ड की भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का विवेचन किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में मातृ-देवी प्रतिमाओं का क्षेत्रीय वितरण को दर्शाया गया है ।

तृतीय अध्याय एवं चतुर्थ, पंचम एवं षष्ठ अध्यायों में क्रमश: विभिन्न कालों की मातृ-देवी प्रतिमाओं का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है । अन्त में, समस्त अध्यायों के सार को निबद्ध करके उपसंहार प्रस्तुत किया गया है ।

...